ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

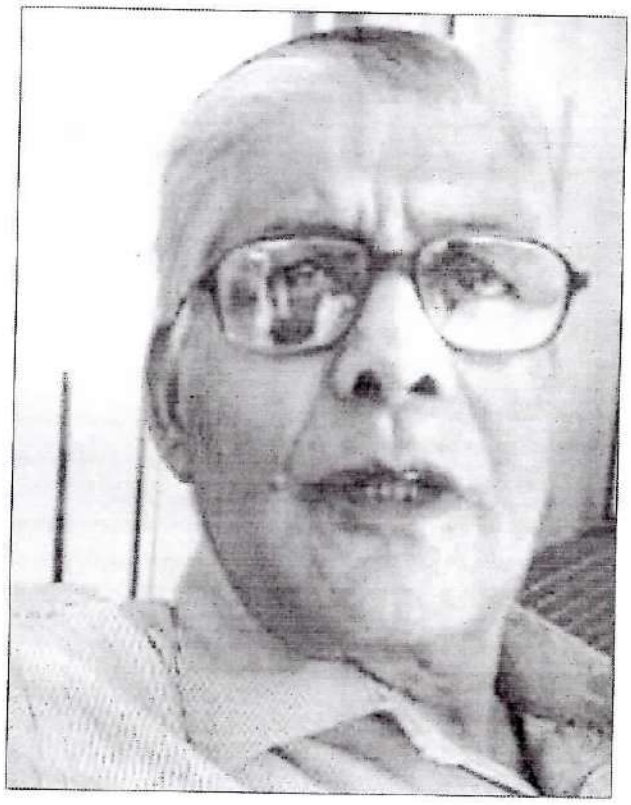

गंगाप्रसाद विमल की रचनाधर्मिता पर एकाग्र

25

वर्ष - 13 ■ अंक - 25 ■ जुलाई-दिसंबर - 2020 ■ पूर्णांक 63 ■ मूल्य ५० रुपए
■ प्रधान संपादक - देवेश ठाकुर ■ संपादक - डॉ. सतीश पांडेय

ISSN-2250-2335 Reg. No. MAHHIN / 2008 / 26222

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

प्रबंध संपादिका :
डॉ. रोहिणी शिवबालन

प्रधान संपादक-प्रकाशक :
डॉ. देवेश ठाकुर

संपादक :
डॉ. सतीश पांडेय

संयुक्त संपादक :
डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट

डिजिटल संपादक :
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

संपादकीय-संपर्क :
बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (पश्चिम), मुंबई-400 084
टेलिफोन : 25161446
Email : sameecheen@gmail.com
website-www.http// : sameecheen.com

विशेष :
'समीचीन' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबद्ध रचनाकारों के हैं। संपादक-प्रकाशक की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय-क्षेत्र मात्र मुंबई होगा। सभी पदाधिकारी पूर्णरूप से अवैतनिक।

परीक्षक विद्वत मंडल : (Peer Review Team)

1) प्रोफेसर ताकेशी फुजिई, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, टोक्यो यूनिवर्सिटी फॉर फॉरेन स्टडीज, टोक्यो।
2) प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र चौबे
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
3) प्रो. (डॉ.) वशिष्ठ अनूप
हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, (उत्तर प्रदेश)
4) प्रो. (डॉ.) सदानंद भोसले, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे।
5) प्रो. (डॉ.) करुणाशंकर उपाध्याय, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई।
6) डॉ. नरेन्द्र मिश्र, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।
7) डॉ. अनिल सिंह, अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई।
8) प्रो. (डॉ.) शरशचंद्र चुलकीमठ, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़।
9) डॉ. अरुणा दुबलिश, पूर्व प्राचार्य, कनोहरलाल महिला, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : देवेश ठाकुर ने प्रिंटोग्राफी सिस्टम (इंडिया) प्रा. लि., 13/डी, कुर्ला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नारी सेवा सदन रोड, नारायण नगर, घाटकोपर (प.), मुंबई-400086 में छपवाकर बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (प.), मुंबई-400084 से प्रकाशित किया।

■ प्रधान संपादक - देवेश ठाकुर ■ संपादक - डॉ. सतीश पांडेय

वर्ष - 13 ■ अंक - 25 ■ *जुलाई-दिसंबर* - 2020 ■ पूर्णांक 63 ■ मूल्य ५० रुपए

सहयोग : एकप्रति रु. 50/-, वार्षिक रु. 100/-, पंच वार्षिक रु. 500/-, आजीवन सदस्यता रु. 5000/-

आम जीवन के कथाकार -डॉ. गंगाप्रसाद विमल

- डॉ. गौरी त्रिपाठी

डॉ गंगाप्रसाद विमल जी का नाम हम सबसे पहले अकहानी आंदोलन के प्रणेता के तौर पर लेते हैं। उनकी कहानियाँ आम जनमानस पर आधारित होती थीं। आम इंसानों के छोटे-छोटे सुख, छोटे-छोटे दुख, उनकी परेशानियाँ, सोच, सपने, काम करने का तरीका, यह सब कुछ उनकी कहानियों के मुख्य विषय हुआ करते थे। कहानी एक ऐसी विधा है जो लगभग हर युग में लोकप्रिय रही है लेकिन स्वतंत्रता के बाद कहानियाँ सबसे ज्यादा लिखी जाने लगीं। नई कहानी हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। इस संदर्भ में प्रख्यात कथाकार कमलेश्वर ने कहा था- 'नई कहानी में कहानी की समग्रता को ही प्रश्रय मिला और यह स्पष्ट हुआ है कि कहानी बनाई नहीं जाती ,वह स्वयं अपना रूप ग्रहण करती है और इस प्रयास के साथ कहानी की सारी पच्चीकारी और शिल्प कहानी के नए स्थापित स्वतंत्र अस्तित्व में पर्यवसित हो गया।'

नई कहानी आंदोलन का एक नया प्रयोग कहानी के रूप में बहुत चर्चित होता है, जिस के अग्रणी माने जाते हैं गंगा प्रसाद विमल। इनकी कहानियों का कथानक आम आदमियों से जुड़ा हुआ है। उनका मानना था कि कविता के बजाय कहानी में बातें अच्छे ढंग से कही जा सकती हैं। उनका कथा साहित्य काफी व्यापक है। इसलिए हम इसे समग्रता में ही देखें तो ज्यादा बेहतर है।

जीवन में घटी हुई कोई एक छोटी सी घटना भी जीवन और कहानी दोनों लिए काफी अहम हो जाती है। उनके सातों कहानी संग्रहों में यह तत्व काफी मिलता है। इन कहानियों में बच्चा, इंतजार में घटना, सड़क पर आत्महत्या, अपहरण आदि कहानियों का नाम लिया जा सकता है। कथावस्तु में मन के भाव भी बहुत अहम भूमिका निभाते हैं ,इससे कहानी का महत्व ज्यादा जीवंत हो जाता है। ये सब मनोभाव कहानियों में प्रमुखता से मिलते हैं, जैसे मेरी कथा यात्रा, प्रेत, अभिशाप, सुराख, समय, बंद दरवाजे के भीतर, सन्नाटा, बीच की दरार, होने से पहले इत्यादि। इनके द्वारा रचित 'प्रेत' एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। कथा के नायक को एक पत्र मिलता है जिसके अनुसार वह प्रेतात्मा है। वह अपने मन ही मन में सोचता रहता है कि क्या वाकई वह प्रेत है। कथा के अंत तक वह इन बातों से मुक्ति पाना चाहता है। 'अभिशाप' कहानी में भी कुछ इसी प्रकार का ताना-बाना रचा गया है। गंगा प्रसाद विमल ने एक जगह लिखा है- 'अक्सर मुझे वे नवयुवक भी मिलते जो राजनीति की बातें किया करते और अंत में बिना निर्णय पर पहुँचे लड़ कर एक दूसरे से अलग जा बैठते'